

Para 14

Sipara 14 of 30 · 227 Ayahs · Translation: Hindi

Al-Hijr

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ ۝

अलिफ़ लाम रा ये किताब (खुदा) और वाजेए व रौशन कुरान की (चन्द) आयते हैं

2

رُبَّمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لَوْ كَانُوا ۝ مُسْلِمِينَ

(एक दिन वह भी आने वाला है कि) जो लोग काफ़िर हो बैठे हैं अक्सर दिल से चाहेंगे

3

ذَرَهُمْ يَأْكُلُوا ۖ وَيَتَمَتَّعُوا ۖ وَيُلْهِمُ الْأَمَلُ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

काश (हम भी) मुसलमान होते (ऐ रसूल) उन्हें उनकी हालत पर रहने दो कि खा पी लें और (दुनिया के चन्द रोज़) चैन कर लें और उनकी तमन्नाएँ उन्हें खेल तमाशे में लगाए रही

4

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ ۖ مَّعْلُومٌ ۖ

अनक़रीब ही (इसका नतीजा) उन्हें मालूम हो जाएगा और हमने कभी कोई बस्ती तबाह नहीं की मगर ये कि उसकी तबाही के लिए (पहले ही से) समझी बूझी मियाद मुकर्रर लिखी हुई थी

5

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَخِرُونَ

कोई उम्मत अपने वक्त से न आगे बढ़ सकती है न पीछे हट सकती है

6

وَقَالُوا ۖ يَأْيُهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۖ

(ऐ रसूल कुफ़ारे मक्का तुमसे) कहते हैं कि ऐ शरूफ़ (जिसको ये भ्रम है) कि उस पर 'वही' व किताब नाज़िल हुई है तो (अच्छा खासा) सिड़ी है

7

لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَكَةِ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ

अगर तू अपने दावे में सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं ला खड़ा करता

8

مَا نُنَزِّلُ الْمَلَكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذْۢا مُّنْظَرِيْنَ

(हालाँकि) हम फरिश्तों को खुल्लम खुल्ला (जिस अज़ाब के साथ) फैसले ही के लिए भेजा करते हैं और (अगर फरिश्ते नाज़िल हो जाए तो) फिर उनको (जान बचाने की) मोहलत भी न मिले

9

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحٰفِظُوْنَ

बेशक हम ही ने कुरान नाज़िल किया और हम ही तो उसके निगेहबान भी हैं

10

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِيْعِ الْأَوَّلِيْنَ

(ऐ रसूल) हमने तो तुमसे पहले भी अगली उम्मतों में (और भी बहुत से) रसूल भेजे

11

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُوْنَ

और (उनकी भी यही हालत थी कि) उनके पास कोई रसूल न आया मगर उन लोगों ने उसकी हँसी ज़रूर उड़ाई

12

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهُۥ فِي قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ

हम (गोया खुद) इसी तरह इस (गुमराही) को (उन) गुनाहगारों के दिल में डाल देते हैं

13

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهِۦ ۚ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِيْنَ

ये कुफ़्कार इस (कुरान) पर ईमान न लाएँगे और (ये कुछ अनोखी बात नहीं) अगलों के तरीके भी (ऐसे ही) रहें हैं

14

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوا۟ فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ

और अगर हम अपनी कुदरत से आसमान का एक दरवाज़ा भी खोल दें और ये लोग दिन दहाड़े उस दरवाज़े से (आसमान पर) चढ़ भी जाएँ

15

لَقَالُوا ۖ إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَرُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ۖ

तब भी यहीं कहेंगे कि हो न हो हमारी आँखें (नज़र बन्दी से) मतवाली कर दी गई हैं या नहीं तो हम लोगों पर जादू किया गया है

16

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا ۖ وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ

और हम ही ने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के वास्ते उनके (सितारों से) आरास्ता (सजाया) किया

17

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ

और हर शैतान मरदूद की आमद रफत (आने जाने) से उन्हें महफूज़ रखा

18

إِلَّا مَنْ أَسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ ۖ شِهَابٌ مُبِينٌ ۖ

मगर जो शैतान चोरी छिपे (वहाँ की किसी बात पर) कान लगाए तो यहबाब का दहकता हुआ योला उसके (खदेड़ने को) पीछे पड़ जाता है

19

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوْسِيَ وَأَنزَلْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ۖ

और ज़मीन को (भी) अपने मखलूक़ात के रहने सहने को) हम ही ने फैलाया और इसमें (कील की तरह) पहाड़ों के लंगर डाल दिए और हमने उसमें हर किस्म की मुनासिब चीज़ें उगाई

20

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعِيشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهُ ۖ بَرِّزِقِينَ

और हम ही ने उन्हें तुम्हारे वास्ते ज़िन्दगी के साज़ों सामान बना दिए और उन जानवरों के लिए भी जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते

21

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ ۖ وَمَا نُنْزِلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۖ

और हमारे यहाँ तो हर चीज़ के बेशुमार खज़ाने (भरे) पड़े हैं और हम (उसमें से) एक जची तली मिक्कदार भेजते रहते हैं

22

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوْفِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَسْقَيْنُكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ ۖ بِخَزَنِينَ

और हम ही ने वह हवाएँ भेजी जो बादलों को पानी से (भरे हुए) है फिर हम ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने तुम लोगों को वह पानी पिलाया और तुम लोगों ने तो कुछ उसको जमा करके नहीं रखा था

23

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِ ۖ وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ

और इसमें शक नहीं कि हम ही (लोगों को) जिलाते और हम ही मार डालते हैं और (फिर) हम ही (सब के) वाली वारिस हैं

24

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَخْرِينَ

और बेशक हम ही ने तुममें से उन लोगों को भी अच्छी तरह समझ लिया जो पहले हो गुज़रे और हमने उनको भी जान लिया जो बाद को आने वाले हैं

25

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۖ إِنَّهُ ۖ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۖ

और इसमें शक नहीं कि तेरा परवरदिगार वही है जो उन सब को (क़यामत में कब्रों से) उठाएगा बेशक वह हिकमत वाला वाकिफकार है

26

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَلٍ ۖ مِنْ حَمَإٍ ۖ مَسْنُونٍ ۖ

और बेशक हम ही ने आदमी को खमीर (गुंधी) दी हुई सड़ी मिट्टी से जो (सूखकर) खन खन बोलने लगे पैदा किया

27

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السَّمُومِ

और हम ही ने जिन्नात को आदमी से (भी) पहले वे धुएँ की तेज़ आग से पैदा किया

28

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَأِكَةِ إِنِّي خَلَقْتُ ۖ بَشَرًا ۖ مِّنْ صَلْصَلٍ ۖ مِّنْ حَمَإٍ ۖ مَسْنُونٍ ۖ

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं एक आदमी को खमीर दी हुई मिट्टी से (जो सूखकर) खन खन बोलने लगे पैदा करने वाला हूँ

فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ ۖ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا۟ لَهُۥ ۖ سَاجِدِينَ

तो जिस वक्त मैं उसको हर तरह से दुरुस्त कर चुके और उसमें अपनी (तरफ से) रुह फूँक दूँ तो सब के सब उसके सामने सजदे में गिर पड़ना

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ

गरज फरिश्ते तो सब के सब सर ब सजूद हो गए

إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ

मगर इबलीस (मलऊन) की उसने सजदा करने वालों के साथ शामिल होने से इन्कार किया

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ

(इस पर खुदा ने) फरमाया आओ शैतान आखिर तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों के साथ शामिल न हुआ

قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُۥ ۖ مِنْ صَلْصَلٍ ۖ مِنْ حَمَإٍ ۖ مَّسْنُونٍ ۖ

वह (ढिठाई से) कहने लगा मैं ऐसा गया गुज़रा तो हूँ नहीं कि ऐसे आदमी को सजदा कर बैटूँ जिसे तूने सड़ी हुई खन खन बोलने वाली मिट्टी से पैदा किया है

قَالَ فَأَخْرِجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَاجِعٌ ۖ

खुदा ने फरमाया (नहीं तू) तो बेहश्त से निकल जा (दूर हो) कि बेशक तू मरदूद है

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ

और यक्रीनन तुझ पर रोज़े में जज़ा तक फिटकार बरसा करेगी

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ

शैतान ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार खैर तू मुझे उस दिन तक की मोहलत दे जबकि (लोग दोबारा ज़िन्दा करके) उठाए जाएँगे

37

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ

खुदा ने फरमाया वक्त मुकर्रर

38

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ

के दिन तक तुझे मोहलत दी गई

39

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ

उन शैतान ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार चूँकि तूने मुझे रास्ते से अलग किया मैं भी उनके लिए दुनिया में (साज़ व सामान को) उम्दा कर दिखाऊँगा और सबको ज़रूर बहकाऊंगा

40

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ

मगर उनमें से तेरे निरे खुरे खास बन्दे (कि वह मेरे बहकाने में न आएँगे)

41

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ

खुदा ने फरमाया कि यही राह सीधी है कि मुझ तक (पहुँचती) है

42

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنْ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ

जो मेरे मुखलिस (खास बन्दे) बन्दे हैं उन पर तुझसे किसी तरह की हुकूमत न होगी मगर हाँ गुमराहों में से जो तेरी पैरवी करे (उस पर तेरा वार चल जाएगा)

43

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ

और हाँ ये भी याद रहे कि उन सब के वास्ते (आखिरी) वायदा बस जहन्न ुम है जिसके सात दरवाजे होंगे

44

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۖ لِكُلِّ بَابٍ ۖ مِنْهُمْ جُزْءٌ ۖ مَّقْسُومٌ

हर (दरवाज़े में जाने) के लिए उन गुमराहों की अलग अलग टोलियाँ होंगी

45

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ

और परहेज़गार तो बेहश्त के बाग़ों और चश्मों में यक़ीनन होंगे

46

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ءَامِنِينَ

(दाख़िले के वक़्त फ़रिश्ते कहेंगे कि) उनमें सलामती इत्मिनान से चले चलो

47

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ

और (दुनिया की तकलीफ़ों से) जो कुछ उनके दिल में रंज था उसको भी हम निकाल देंगे और ये बाहम एक दूसरे के आमने सामने तख़्तों पर इस तरह बैठे होंगे जैसे भाई भाई

48

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ ۚ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ

उनको बेहश्त में तकलीफ़ छुएगी भी तो नहीं और न कभी उसमें से निकाले जाएँगे

49

ۚ نَبِيُّ عِبَادِيَ أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

(ऐ रसूल) मेरे बन्दों को आगाह करो कि बेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान हूँ

50

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ

मगर साथ ही इसके (ये भी याद रहे कि) बेशक मेरा अज़ाब भी बड़ा दर्दनाक अज़ाब है

51

وَنَبِّهَهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ

और उनको इबराहीम के मेहमान का हाल सुना दो

52

إِذْ دَخَلُوا ۖ عَلَيْهِ فَقَالُوا ۖ سَلَامٌ ۖ أَا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ

कि जब ये इबराहीम के पास आए तो (पहले) उन्होंने सलाम किया इबराहीम ने (जवाब सलाम के बाद) कहा हमको तो तुम से डर मालूम होता है

قَالُوا ۚ لَا تَوَجَّلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلْمٍ عَلِيمٍ ۚ

उन्होंने कहा आप मुत्तालिक् खौफ न कीजिए (क्योंकि) हम तो आप को एक (दाना व बीना) फरज़न्द (के पैदाइश) की खुशखबरी देते हैं

قَالَ أَبَشِّرْتُمُونِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ

इब्राहिम ने कहा क्या मुझे खुशखबरी (बेटा होने की) देते हो जब मुझे बुढ़ापा छा गया

قَالُوا ۚ بَشِّرْكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْقَنِطِينَ

तो फिर अब काहे की खुशखबरी देते हो वह फरिश्ते बोले हमने आप को बिल्कुल ठीक खुशखबरी दी है तो आप (बारगाह खुदा बन्दी से) ना उम्मीद न हो

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِ ۖ إِلَّا الضَّالُّونَ

इबराहीम ने कहा गुमराहों के सिवा और ऐसा कौन है जो अपने परवरदिगार की रहमत से ना उम्मीद हो

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ

(फिर) इबराहीम ने कहा ऐ (खुदा के) भेजे हुए (फरिश्तों) तुम्हें आखिर क्या मुहिम दर पेश है

قَالُوا ۚ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ

उन्होंने कहा कि हम तो एक गुनाहगार कौम की तरफ (अज़ाब नाज़िल करने के लिए) भेजे गए हैं

إِلَّا عَالٍ لُّوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ

मगर लूत के लड़के वाले कि हम उन सबको ज़रूर बचा लेंगे मगर उनकी बीबी जिसे हमने ताक लिया है

إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ قَدَرْنَا ۚ إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ

कि वह ज़रूर (अपने लड़के बालों के) पीछे (अज़ाब में) रह जाएगी

61

فَلَمَّا جَاءَ عَالَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ

गरज जब (खुदा के) भेजे हुए (फरिश्ते) लूत के बाल बच्चों के पास आए तो लूत ने कहा कि तुम तो (कुछ) अजनबी लोग (मालूम होते हो)

62

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ

फरिश्तों ने कहा (नहीं) बल्कि हम तो आपके पास वह (अज़ाब) लेकर आए हैं

63

قَالُوا؟ بَلْ جِنَّتْكَ بِمَا كَانُوا؟ فِيهِ يَمْتَرُونَ

जिसके बारे में आपकी क्रौम के लोग शक रखते थे

64

وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ

(कि आए न आए) और हम आप के पास (अज़ाब का) कलई (सही) हुक्म लेकर आए हैं और हम बिल्कुल सच कहते हैं

65

فَأَسْرِبْ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبُرَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَأَمْضُوا؟
حَيْثُ تُؤْمَرُونَ

बस तो आप कुछ रात रहे अपने लड़के बालों को लेकर निकल जाइए और आप सब के सब पीछे रहिएगा और उन लोगों में से कोई मुड़कर पीछे न देखे और जिधर (जाने) का हुक्म दिया गया है (शाम) उधर (सीधे) चले जाओ और हमने लूत के पास इस अम्र का कतई फैसला कहला भेजा

66

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ

कि बस सुबह होते होते उन लोगों की जड़ काट डाली जाएगी

67

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ

और (ये बात हो रही थीं कि) शहर के लोग (मेहमानों की खबर सुन कर बुरी नीयत से) खुशियाँ मनाते हुए आ पहुँचे

68

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ

लूत ने (उनसे कहा) कि ये लोग मेरे मेहमान हैं तो तुम (इन्हें सताकर) मुझे रुसवा बदनाम न करो

69

وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ

और खुदा से डरो और मुझे ज़लील न करो

70

قَالُوا ۚ أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعُلَمِينَ

वह लोग कहने लगे क्यों जी हमने तुम को सारे जहाँ के लोगों (के आने) की मनाही नहीं कर दी थी

71

قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ

लूत ने कहा अगर तुमको (ऐसा ही) करना है तो ये मेरी क़ौम की बेटियाँ मौजूद हैं

72

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ

(इनसे निकाह कर लो) ऐ रसूल तुम्हारी जान की कसम ये लोग (क़ौम लूत) अपनी मस्ती में मदहोश हो रहे थे

73

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ

(लूत की सुनते काहे को) गरज़ सूरज निकलते निकलते उनको (बड़े ज़ोरो की) चिघाड़ न ले डाला

74

فَجَعَلْنَا عَلَيْهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً ۚ مِنْ سِجِّيلٍ

फिर हमने उसी बस्ती को उलट कर उसके ऊपर के तबके को नीचे का तबका बना दिया और उसके ऊपर उन पर खरन्जे के पत्थर बरसा दिए इसमें शक नहीं कि इसमें (असली बात के) ताड़ जाने वालों के लिए (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

75

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۚ لِلْمُتَوَسِّمِينَ

और वह उलटी हुई बस्ती हमेशा (की आमदरफ्त)

76

وَأَنَّهَا لَبِسَبِيلٍ ۚ مُقِيمٍ

के रास्ते पर है

77

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ لِلْمُؤْمِنِينَ

इसमें तो शक हीं नहीं कि इसमें ईमानदारों के वास्ते (कुदरते खुदा की) बहुत बड़ी निशानी है

78

وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ

और ऐका के रहने वाले (क्रौमे शुएब की तरह बड़े सरकश थे)

79

فَأَنْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ ۚ مُبِينٍ ۚ

तो उन से भी हमने (नाफरमानी का) बदला लिया और ये दो बस्तियाँ (क्रौमे लूत व शुएब की) एक खुली हुई यह राह पर (अभी तक मौजूद) हैं

80

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحَجَرِ الْمُرْسَلِينَ

और इसी तरह हिज्र के रहने वालों (क्रौम सालेह ने भी) पैग़म्बरों को झुठलाया

81

وَعَاتَيْنَاهُمْ ءَايَاتِنَا فَكَانُوا ۚ عَنْهَا مُعْرِضِينَ

और (बावजूद कि) हमने उन्हें अपनी निशानियाँ दी उस पर भी वह लोग उनसे रद्द गिरदानी करते रहे

82

وَكَانُوا ۚ يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا ءَامِنِينَ

और बहुत दिल जोई से पहाड़ों को तराश कर घर बनाते रहे

83

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ

आखिर उनके सुबह होते होते एक बड़ी (जोरों की) चिंघाड़ ने ले डाला

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا؟ يَكْسِبُونَ

फिर जो कुछ वह अपनी हिफाज़त की तदबीर किया करते थे (अज़ाब खुदा से बचाने में) कि कुछ भी काम न आयी

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ؟ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَءَاتِيَةٌ؟
فَأَصْفَحْ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ

और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के दरमियान में है हिकमत व मसलहत से पैदा किया है और क़यामत यकीनन ज़रूर आने वाली है तो तुम (ऐ रसूल) उन काफ़िरो से शाइस्ता उनवान (अच्छे बरताव) के साथ दर गुज़र करो

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ

इसमें शक़ नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा पैदा करने वाला है

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا؟ مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ

(बड़ा दाना व बीना है) और हमने तुमको सबए मसानी (सूरे हम्द) और कुरान अज़ीम अता किया है

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ؟ أَزَوْجًا؟ مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَأَخْفِضْ
جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ

और हमने जो उन कुफ़ारों में से कुछ लोगों को (दुनिया की) माल व दौलत से निहाल कर दिया है तुम उसकी तरफ़ हरगिज़ नज़र भी न उठाना और न उनकी (बेदीनी) पर कुछ अफ़सोस करना और ईमानदारों से (अगरचे ग़रीब हो) झुककर मिला करो और कहा दो कि मैं तो (अज़ाबे खुदा से) सरीही तौर से डराने वाला हूँ

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ

(ऐ रसूल) उन कुफ़ारों पर इस तरह अज़ाब नाज़िल करेंगे जिस तरह हमने उन लोगों पर नाज़िल किया

كَمَا أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ

जिन्होंने कुरान को बाँट कर टुकड़े टुकड़े कर डाला

91

الَّذِينَ جَعَلُوا[ۙ] الْقُرْآنَ عِضِينَ

(बाज़ को माना बाज़ को नहीं) तो ऐ रसूल तुम्हारे ही परवरदिगार की (अपनी) कसम

92

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ

कि हम उनसे जो कुछ ये (दुनिया में) किया करते थे (बहुत सख्ती से) ज़रूर बाज़ पुर्स (पुछताछ) करेंगे

93

عَمَّا كَانُوا[ۙ] يَعْمَلُونَ

पस जिसका तुम्हें हुक्म दिया गया है उसे वाजेए करके सुना दो

94

فَأَصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ

और मुशरेकीन की तरफ से मुँह फेर लो

95

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ

जो लोग तुम्हारी हँसी उड़ाते है

96

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ[ۙ] فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

और खुदा के साथ दूसरे परवरदिगार को (शरीक) ठहराते हैं हम तुम्हारी तरफ से उनके लिए काफी हैं तो अनकरीब ही उन्हें मालूम हो जाएगा

97

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ

कि तुम जो इन (कुफ़ारों मुनाफ़िक़ीन) की बातों से दिल तंग होते हो उसको हम ज़रूर जानते हैं

98

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ

तो तुम अपने परवरदिगार की हम्दो सना से उसकी तस्बीह करो और (उसकी बारगाह में) सजदा करने वालों में हो जाओ

وَأَعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّى يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ

और जब तक तुम्हारे पास मौत आए अपने परवरदिगार की इबादत में लगे रहो

An-Nahl

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ أَتَى أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ

ऐ कुफ़ारे मक्का (खुदा का हुक्म (क़यामत गोया) आ पहुँचा तो (ऐ काफ़िरों वे फायदे) तुम इसकी जल्दी न मचाओ जिस चीज़ को ये लोग शरीक करार देते हैं उससे वह खुदा पाक व पाकीज़ा और बरतर है

2

يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ ۚ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ أَنْ أَنْذِرُوا ۚ أَنَّهُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا ۚ فَاتَّقُونَ

वही अपने हुक्म से अपने बन्दों में से जिसके पास चाहता है 'वही' देकर फ़रिशतों को भेजता है कि लोगों को इस बात से आगाह कर दें कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं तो मुझी से डरते रहो

3

خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ

उसी ने सारे आसमान और ज़मीन मसलहत व हिकमत से पैदा किए तो ये लोग जिसको उसका यशरीक बनाते हैं उससे कहीं बरतर है

4

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ ۚ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ ۚ مُبِينٌ ۚ

उसने इन्सान को नुत्फे से पैदा किया फिर वह यकायक (हम ही से) खुल्लम खुल्ला झगड़ने वाला हो गया

5

وَالْأَنْعَمَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ ۚ وَمَنْفَعٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ

उसी ने चरपायों को भी पैदा किया कि तुम्हारे लिए ऊन (ऊन की खाल और ऊन) से जाड़े का सामान है

6

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ

इसके अलावा और भी फायदे हैं और उनमें से बाज़ को तुम खाते हो और जब तुम उन्हें सिरें शाम चराई पर से लाते हो जब सवेरे ही सवेरे चराई पर ले जाते हो

7

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا^१ بُلْغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ^२ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ^३
رَّحِيمٌ^४

तो उनकी वजह से तुम्हारी रौनक भी है और जिन शहरों तक बगैर बड़ी जान ज़ोखम में डाले बगैर के पहुँच न सकते थे वहाँ तक ये चौपाए भी तुम्हारे बोझों भी उठा लिए फिरते हैं इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा शफीक़ मेहरबान है

8

وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً^१ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ^२

और (उसी ने) घोड़ों खच्चरों और गधों को (पैदा किया) ताकि तुम उन पर सवार हो और (इसमें) ज़ीनत (भी) है

9

وَعَلَىٰ اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ^१ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَيْكُمْ أَجْمَعِينَ^२

(उसके अलावा) और चीज़ें भी पैदा करेगा जिनको तुम नहीं जानते हो और (खुशक व तर में) सीधी राह (की हिदायत तो खुदा ही के ज़िम्मे हैं और बाज़ रस्ते टेढ़े हैं

10

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً^१ لَّكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ^२ وَمِنْهُ شَجَرٌ^३ فِيهِ تُسِيمُونَ^४

और अगर खुदा चाहता तो तुम सबको मज़िले मक़सूद तक पहुँचा देता वह वही (खुदा) है जिसने आसमान से पानी बरसाया जिसमें से तुम सब पीते हो और इससे दरख़्त शादाब होते हैं

11

يُنْذِرُ^१ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَبَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ^२ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَةً^३ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ^४

जिनमें तुम (अपने मवेशियों को) चराते हो इसी पानी से तुम्हारे वास्ते खेती और जैतून और खुरमें और अंगूर उगाता है और हर तरह के फल (पैदा करता है) इसमें शक नहीं कि इसमें ग़ौर करने वालों के वास्ते (कुदरते खुदा की) बहुत बड़ी निशानी है

12

وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۚ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ

उसी ने तुम्हारे वास्ते रात को और दिन को और सूरज और चाँद को तुम्हारा ताबेए बना दिया है और सितारे भी उसी के हुक्म से (तुम्हारे) फरमावरदार हैं कुछ शक ही नहीं कि (इसमें) समझदार लोगों के वास्ते यक़ीनन (कुदरत खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

13

وَمَا ذَرَأَّا لَكُمُ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَنُهُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ

और जो तरह तरह के रंगों की चीज़े उसमें ज़मीन में तुम्हारे नफे के वास्ते पैदा की

14

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا ۖ طَرِيًّا ۖ وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حَبِيَّةً ۖ وَتَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاحِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

कुछ शक नहीं कि इसमें भी इबरत व नसीहत हासिल करने वालों के वास्ते (कुदरत खुदा की) बहुत सी निशानी है और वही (वह खुदा है जिसने दरिया को (भी तुम्हारे) कब्ज़े में कर दिया ताकि तुम इसमें से (मछलियों का) ताज़ा ताज़ा गोश्त खाओ और इसमें से जेवर (की चीज़े मोती वगैरह) निकालो जिन को तुम पहना करते हो और तू कश्तियों को देखता है कि (आमद व रफ्त में) दरिया में (पानी को) चीरती फाड़ती आती है

15

وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوْسِي أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَرَ ۖ وَسُبُلًا ۖ لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

और (दरिया को तुम्हारे ताबेए) इसलिए (कर दिया) कि तुम लोग उसके फज़ल (नफा तिजारत) की तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो और उसी ने ज़मीन पर (भारी भारी) पहाड़ों को गाड़ दिया

16

وَعَلَّمَتْ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ

ताकि (ऐसा न हों) कि ज़मीन तुम्हें लेकर झुक जाए (और तुम्हारे क़दम न ज़में) और (उसी ने) नदियाँ और रास्ते (बनाए)

17

أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

ताकि तुम (अपनी अपनी मंज़िले मक़सूद तक पहुँचों (उसके अलावा रास्तों में) और बहुत सी निशानियाँ (पैदा की हैं) और बहुत से लोग सितारे से भी राह मालूम करते हैं

وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

तो क्या जो (खुदा इतने मखलूकात को) पैदा करता है वह उन (बुतों के बराबर हो सकता है जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते और अगर तुम खुदा की नेअमतों को गिनना चाहो तो (इस कसरत से हैं कि) तुम नहीं गिन सकते हो

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ

बेशक खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है कि (तुम्हारी नाफरमानी पर भी नेअमत देता है)

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا ۖ وَهُمْ يُخْلَقُونَ

और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो (गरज़) खुदा (सब कुछ) जानता है और (ये कुफ़ार) खुदा को छोड़कर जिन लोगों को (हाजत के वक्त) पुकारते हैं वह कुछ भी पैदा नहीं कर सकते

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ

(बल्कि) वह खुद दूसरों के बनाए हुए मुर्दे बेजान हैं और इतनी भी खबर नहीं कि कब (क़यामत) होगी और कब मुर्दे उठाए जाएंगे

إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ ۚ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ

(फिर क्या काम आएंगी) तुम्हारा परवरदिगार यकता खुदा है तो जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल ही (इस वजह के हैं कि हर बात का) इन्कार करते हैं और वह बड़े मगरूर हैं

لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ ۙ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ

ये लोग जो कुछ छिपा कर करते हैं और जो कुछ ज़ाहिर बज़ाहिर करते हैं (गरज़ सब कुछ) खुदा ज़रूर जानता है वह हरगिज़ तकबुर करने वालों को पसन्द नहीं करता

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَآذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا ۖ أَطِيرُ الْأَوَّلِينَ

और जब उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है तो वह कहते हैं कि (अजी कुछ भी नहीं बस) अगलो के किस्से हैं

لِيَحْمِلُوا ۖ أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً ۖ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ
أَلَا سَاءَ مَا يَزُرُونَ

(उनको बकने दो ताकि क़यामत के दिन) अपने (गुनाहों) के पूरे बोझ और जिन लोगों को उन्होंने बे समझे बूझे गुमराह किया है उनके (गुनाहों के) बोझ भी उन्हीं को उठाने पड़ेंगे ज़रा देखो तो कि ये लोग कैसा बुरा बोझ अपने ऊपर लादे चले जा रहें हैं

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ
فَوْقِهِمْ وَأَتَتْهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ

बेशक जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने भी मक्कारियाँ की थीं तो (खुदा का हुक्म) उनके ख्यालात की इमारत की जड़ की तरफ से आ पड़ा (पस फिर क्या था) इस ख्याली इमारत की छत उन पर उनके ऊपर से धम से गिर पड़ी (और सब ख्याल हवा हो गए) और जिधर से उन पर अज़ाब आ पहुँचा उसकी उनको खबर तक न थी

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآئِ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ ۖ قَالَ الَّذِينَ
أُوتُوا ۖ الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوَاءَ عَلَى الْكَافِرِينَ

(फिर उसी पर इकतिफा नहीं) उसके बाद क़यामत के दिन खुदा उनको रुसवा करेगा और फरमाएगा कि (अब बताओ) जिसको तुमने मेरा यशरीक बना रखा था और जिनके बारे में तुम (ईमानदारों से) झगड़ते थे कहाँ हैं (वह तो कुछ जवाब देंगे नहीं मगर) जिन लोगों को (खुदा की तरफ से) इल्म दिया गया है कहेंगे कि आज के दिन रुसवाई और खराबी (सब कुछ) काफिरों पर ही है

الَّذِينَ تَتَوَفَّيْهُمْ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ ۖ فَأَلْقُوا ۖ أَلْسَلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ
سُوءٍ ۖ ۚ بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ ۖ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

वह लोग हैं कि जब फरिश्ते उनकी रुह क़ब्ज़ करने लगते हैं (और) ये लोग (कुफ़्र करके) आप अपने ऊपर सितम ढाते रहे तो इताअत पर आमादा नज़र आते हैं और (कहते हैं कि) हम तो (अपने ख्याल में) कोई बुराई नहीं करते थे (तो फरिश्ते कहते हैं) हाँ जो कुछ तुम्हारी करतूत थी खुदा उससे खूब अच्छी तरह वाक़िफ है

فَادْخُلُوا ۚ أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ

(अच्छा तो लो) जहन्नुम के दरवाज़ों में दाखिल हो और इसमें हमेशा रहोगे गरज तकबुर करने वालो का भी क्या बुरा ठिकाना है

ۚ وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا ۚ خَيْرٌ ۚ ا ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا ۚ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ

और जब परहेज़गारों से पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है तो बोल उठते हैं सब अच्छे से अच्छा जिन लोगों ने नेकी की उनके लिए इस दुनिया में (भी) भलाई (ही भलाई) है और आखिरत का घर क्या उम्दा है

جَنَّتُ عَدْنٍ ۚ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ

सदा बहार (हरे भरे) बाग हैं जिनमें (वे तकल्लुफ) जा पहुँचेंगे उनके नीचे नहरें जारी होंगी और ये लोग जो चाहेंगे उनके लिए मुयय्या (मौजूद) है यूँ खुदा परहेज़गारों (को उनके किए) की जज़ा अता फरमाता है

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۚ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ادْخُلُوا ۚ الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

(ये) वह लोग हैं जिनकी रुहें फरिश्ते इस हालत में क़ब्ज़ करते हैं कि वह (नजासते कुफ़ से) पाक व पाकीज़ा होते हैं तो फरिश्ते उनसे (निहायत तपाक से) कहते हैं सलामुन अलैकुम जो नेकियाँ दुनिया में तुम करते थे उसके सिले में जन्नत में (बेतकल्लुफ) चले जाओ

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

(ऐ रसूल) क्या ये (अहले मक्का) इसी बात के मुन्तिज़र हैं कि उनके पास फरिश्ते (क़ब्ज़े रुह को) आ ही जाएँ या (उनके हलाक करने को) तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब ही आ पहुँचे जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं वह ऐसी बातें कर चुके हैं और खुदा ने उन पर (ज़रा भी) जुल्म नहीं किया बल्कि वह लोग खुद कुफ़ की वजह से अपने ऊपर आप जुल्म करते रहे

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا ۖ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهٖ ۚ يَسْتَهْزِءُونَ

फिर जो जो करतूतें उनकी थी उसकी सज़ा में बुरे नतीजे उनको मिले और जिस (अज़ाब) की वह हँसी उड़ाया करते थे उसने उन्हें (चारों तरफ से) घेर लिया

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ ۚ مِنْ شَيْءٍ ۚ نَحْنُ وَلَا ءَابَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ ۚ مِنْ شَيْءٍ ۚ ۚ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِينُ

और मुशरेकीन कहते हैं कि अगर खुदा चाहता तो न हम ही उसके सिवा किसी और चीज़ की इबादत करते और न हमारे बाप दादा और न हम बग़ैर उस (की मर्जी) के किसी चीज़ को ह़राम कर बैठते जो लोग इनसे पहले हो गुज़रे हैं वह भी ऐसे (हीला हवाले की) बातें कर चुके हैं तो (कहा करें) पैग़म्बरों पर तो उसके सिवा कि एहक़ाम को साफ़ साफ़ पहुँचा दे और कुछ भी नहीं

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ ۚ رَّسُولًا أَنْ اعْبُدُوا ۚ اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا ۚ الطَّغُوتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا ۚ كَيْفَ كَانَ عَقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ

और हमने तो हर उम्मत में एक (न एक) रसूल इस बात के लिए ज़रूर भेजा कि लोगों खुदा की इबादत करो और बुतों (की इबादत) से बचे रहो गरज़ उनमें से बाज़ की तो खुदा ने हिदायत की और बाज़ के (सर) पर गुमराही सवार हो गई तो ज़रा तुम लोग रुए ज़मीन पर चल फिर कर देखो तो कि (पैग़म्बराने खुदा के) झुटलाने वालों को क्या अन्जाम हुआ

إِنْ تَحْرِصْ عَلَى هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ

(ऐ रसूल) अगर तुमको इन लोगों के राहे रास्त पर जाने का हौका है (तो बे फायदा) क्योंकि खुदा तो हरगिज़ उस शख्स की हिदायत नहीं करेगा जिसको (नाज़िल होने की वजह से) गुमराही में छोड़ देता है और न उनका कोई मददगार है

وَأَقْسَمُوا۟ بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَنِهِمْ ۖ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مِن يَمُوتٍ ۖ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقٌّ ۚ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

(कि अज़ाब से बचाए) और ये कुफ़ार खुदा की जितनी क़समें उनके इमकान में तुम्हें खा (कर कहते) हैं कि जो शख्स मर जाता है फिर उसको खुदा दोबारा ज़िन्दा नहीं करेगा (ऐ रसूल) तुम कह दो कि हाँ ज़रूर ऐसा करेगा इस पर अपने वायदे की (वफ़ा) लाज़िम व ज़रूरी है मगर बहुतेरे आदमी नहीं जानते हैं

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا۟ أَنَّهُمْ كَانُوا۟ كَذِبِينَ

(दोबारा ज़िन्दा करना इसलिए ज़रूरी है) कि जिन बातों पर ये लोग झगड़ा करते हैं उन्हें उनके सामने साफ़ वाज़ेह कर देगा और ताकि कुफ़ार ये समझ लें कि ये लोग (दुनिया में) झूठे थे

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ ۖ كُنْ فَيَكُونُ

हम जब किसी चीज़ (के पैदा करने) का इरादा करते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होता है कि हम कह देते हैं कि 'हो जा' बस फौरन हो जाती है (तो फिर मुर्दों का जिलाना भी कोई बात है)

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا۟ فِي اللّٰهِ مِنۢ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا۟ ۖ لَنُبَوِّئَنَّهُمُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ ۚ
وَلَآ جَزَآءَ آخِرَةٍ أَكْبَرُ ۖ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ

और जिन लोगों ने (कुफ़ार के ज़ुल्म पर ज़ुल्म सहने के बाद खुदा की खुशी के लिए घर बार छोड़ा हिज़रत की हम उनको ज़रूर दुनिया में भी अच्छी जगह बिठाएँगे और आखिरत की जज़ा तो उससे कहीं बढ़ कर है काश ये लोग जिन्होंने खुदा की राह में सख्तियों पर सब्र किया

الَّذِينَ صَبَرُوا۟ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

और अपने परवरदिगार ही पर भरोसा रखते हैं (आखिरत का सवाब) जानते होते

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجَالًا ۖ تُوْحَىٰ إِلَيْهِمْ ۚ فَسَلُّوا ۚ أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

और (ऐ रसूल) तुम से पहले आदमियों ही को पैग़म्बर बना बनाकर भेजा किए जिन की तरफ हम वहीं भेजते थे तो (तुम अहले मक्का से कहो कि) अगर तुम खुद नहीं जानते हो तो अहले ज़िक्र (आलिमों से) पूछो (और उन पैग़म्बरों को भेजा भी तो) रौशन दलीलों और किताबों के साथ

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۚ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ

और तुम्हारे पास कुरान नाज़िल किया है ताकि जो एहकाम लोगों के लिए नाज़िल किए गए हैं तुम उनसे साफ साफ बयान कर दो ताकि वह लोग खुद से कुछ ग़ौर फ़िक्र करें

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا ۚ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ

तो क्या जो लोग बड़ी बड़ी मक्कारियाँ (शिक्र वगैरह) करते थे (उनको इस बात का इत्मिनान हो गया है (और मुत्तलिक़ ख़ौफ़ नहीं) कि खुदा उन्हें ज़मीन में धसा दे या ऐसी तरफ से उन पर अज़ाब आ पहुँचे कि उसकी उनको ख़बर भी न हो

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلُبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ

उनके चलते फिरते (खुदा का अज़ाब) उन्हें गिरफ्तार करे तो वह लोग उसे ज़ेर नहीं कर सकते

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ ۚ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ ۚ رَحِيمٌ

या वह अज़ाब से डरते हो तो (उसी हालत में) धर पकड़ करे इसमें तो शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा शफीक़ रहम वाला है

أَوَلَمْ يَرَوْا ۚ إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ يَتَفَيَّؤُا ۚ ظِلُّهُ ۚ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا ۚ لِلَّهِ وَهُمْ دُخْرُونَ

क्या उन लोगों ने खुदा की मख़लूक़ात में से कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी जिसका साया (कभी) दाहिनी तरफ और कभी बायीं तरफ पलटा रहता है कि (गोया) खुदा के सामने सर सजदा है और सब इताअत का इज़हार करते हैं

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ

और जितनी चीज़ें (चादँ सूरज वगैरह) आसमानों में हैं और जितने जानवर ज़मीन में हैं सब खुदा ही के आगे सर सज्द हैं और फरिश्ते तो (हैं ही) और वह हुक्में खुदा से सरकशी नहीं करते (49) (सजदा)

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۖ

और अपने परवरदिगार से जो उनसे (कहीं) बरतर (बड़ा) व आला है डरते हैं और जो हुक्में दिया जाता है फौरन बजा लाते हैं

ۖ وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا ۖ إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهُ ۖ وَحْدٌ ۖ ۚ فَإِئِىٰ فَاَرْهَبُونَ

और खुदा ने फरमाया था कि दो दो माबूद न बनाओ माबूद तो बस वही यकता खुदा है सिर्फ मुझी से डरते रहो

وَلَهُ ۖ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۖ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ

और जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं (गरज) सब कुछ उसी का है और खालिस फरमाबरदारी हमेशा उसी को लाज़िम (जरूरी) है तो क्या तुम लोग खुदा के सिवा (किसी और से भी) डरते हो

وَمَا بِكُمْ مِنْ نِعْمَةٍ ۖ فَمِنْ اللَّهِ ۖ ۚ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْرُونَ

और जितनी नेअमतेँ तुम्हारे साथ हैं (सब ही की तरफ से हैं) फिर जब तुमको तकलीफ छू भी गई तो तुम उसी के आगे फरियाद करने लगते हो

ثُمَّ إِذَا كُشِفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيقٌ ۖ مِنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ

फिर जब वह तुमसे तकलीफ को दूर कर देता है तो बस फौरन तुममें से कुछ लोग अपने परवरदिगार को शरीक ठहराते हैं

لِيَكْفُرُوا ۖ بِمَا ءَاتَيْنَاهُمْ ۖ فَتَمَتَّعُوا ۖ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ

ताकि जो (नेअमतेँ) हमने उनको दी है उनकी नाशुक्री करें तो (खैर दुनिया में चन्द रोज़ चैन कर लो फिर तो अनकरीब तुमको मालूम हो जाएगा

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا ۚ مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۚ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَفْتَرُونَ

और हमने जो रोज़ी उनको दी है उसमें से ये लोग उन बुतों का हिस्सा भी करार देते हैं जिनकी हकीकत नहीं जानते तो खुदा की (अपनी) क्रिस्म जो इफ़तेरा परदाज़ियाँ तुम करते थे (क़यामत में) उनकी बाज़पुर्स (पूछ गछ) तुम से ज़रूर की जाएगी

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَنَهُ ۚ ۚ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ

और ये लोग खुदा के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते हैं (सुबान अल्लाह) वह उस से पाक व पाकीज़ा है

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنْثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ ۚ مُسْوَدًّا ۚ وَهُوَ كَظِيمٌ ۚ

और अपने लिए (बेटे) जो मरगूब (दिल पसन्द) हैं और जब उसमें से किसी एक को लड़की पैदा होने की जो खुशखबरी दीजिए रंज के मारे मुँह काला हो जाता है

يَتَوَرَّأُ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ ۚ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ ۚ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ

और वह ज़हर का सा घूँट पीकर रह जाता है (बेटी की) जिसकी खुशखबरी दी गई है अपनी क़ौम के लोगों से छिपा फिरता है (और सोचता है) कि क्या इसको ज़िल्लत उठाके ज़िन्दा रहने दे या (ज़िन्दा ही) इसको ज़मीन में गाड़ दे-देखो तुम लोग किस क़दर बुरा एहकाम (हुक़्म) लगाते हैं

لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السُّوءِ ۚ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

बुरी (बुरी) बातें तो उन्हीं लोगों के लिए ज़्यादा मुनासिब हैं जो आखिरत का यक़ीन नहीं रखते और खुदा की शान के लायक़ तो आला सिफते (बहुत बड़ी अच्छाईया) हैं और वही तो ग़ालिब है

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ ۚ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَحْزِرُونَ سَاعَةً ۚ ۚ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ

और अगर (कहीं) खुदा अपने बन्दों की नाफरमानियों की गिरफ़्त करता तो रुए ज़मीन पर किसी एक जानदार को बाक़ी न छोड़ता मगर वह तो एक मुक़रर वक़्त तक उन सबको मोहलत देता है फिर जब उनका (वह) वक़्त आ पहुँचेगा तो न एक घड़ी पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۚ لَا جَرَمَ أَنَّ
لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمْ مُّفْرَطُونَ

और ये लोग खुद जिन बातों को पसन्द नहीं करते उनको खुदा के वास्ते क़रार देते हैं और अपनी ही ज़बान से ये झूठे दावे भी करते हैं कि (आखिरत में भी) उन्हीं के लिए भलाई है (भलाई तो नहीं मगर) हाँ उनके लिए जहन्नुम की आग ज़रूरी है और यही लोग सबसे पहले (उसमें) झोंके जाएँगे

تَاللّٰهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ ۖ مِّن قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَلَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

(ऐ रसूल) खुदा की (अपनी) कसम तुमसे पहले उम्मतों के पास बहुतेरे पैगम्बर भेजे तो शैतान ने उनकी कारस्तानियों को उम्दा कर दिखाया तो वही (शैतान) आज भी उन लोगों का सरपरस्त बना हुआ है हालाँकि उनके वास्ते दर्दनाक अज़ाब है

وَمَا أُنزِلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا ۖ فِيهِ ۚ وَهُدًى وَرَحْمَةً ۚ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

और हमने तुम पर किताब (कुरान) तो इसी लिए नाज़िल की ताकि जिन बातों में ये लोग बाहम झगड़ा किए हैं उनको तुम साफ साफ बयान करो (और यह किताब) ईमानदारों के लिए तो (अज़सरतापा) हिदायत और रहमत है

وَاللّٰهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۚ
لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ

और खुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया तो उसके ज़रिए ज़मीन को मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा (शादाब) (हरी भरी) किया क्या कुछ शक नहीं कि इसमें जो लोग बसते हैं उनके वास्ते (कुदरते खुदा की) बहुत बड़ी निशानी है

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ ۖ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ ۚ مِنۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ ۚ
لِّبَنَّا خَالِصًا ۖ سَائِغًا ۖ لِلشَّارِبِينَ

और इसमें शक नहीं कि चौपायों में भी तुम्हारे लिए (इबरेत की बात) है कि उनके पेट में खाक, बला, गोबर और खून (जो कुछ भरा है) उसमें से हमे तुमको खालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए खुशगवार है

وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا ۖ وَرِزْقًا حَسَنًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ

और इसी तरह खुरमें और अंगूर के फल से (हम तुमको शीरा पिलाते हैं) जिसकी (कभी तो) तुम शराब बना लिया करते हो और कभी अच्छी रोज़ी (सिरका वगैरह) इसमें शक नहीं कि इसमें भी समझदार लोगों के लिए (कुदरत खुदा की) बड़ी निशानी है

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنْ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا ۖ وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ

और (ऐ रसूल) तुम्हारे परवरदिगार ने शहद की मक्खियों के दिल में ये बात डाली कि तू पहाड़ों और दरख्तों और ऊँची ऊँची दृटियाँ (और मकानात पाट कर) बनाते हैं

ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلًّا ۚ ۖ يَخْرُجُ مِنْ ۚ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَنُهُ ۚ فِيهِ شِفَاءٌ ۖ لِلنَّاسِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

उनमें अपने छत्ते बना फिर हर तरह के फलों (के पूर से) (उनका अर्क) चूस कर फिर अपने परवरदिगार की राहों में ताबेदारी के साथ चली मक्खियों के पेट से पीने की एक चीज़ निकलती है (शहद) जिसके मुख्तलिफ रंग होते हैं इसमें लोगों (के बीमारियों) की शिफ़ा (भी) है इसमें शक नहीं कि इसमें ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के वास्ते (कुदरते खुदा की बहुत बड़ी निशानी है)

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمَرِ لِكَىٰ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ ۖ قَدِيرٌ ۚ

और खुदा ही ने तुमको पैदा किया फिर वही तुमको (दुनिया से) उठा लेगा और तुममें से बाज़ ऐसे भी हैं जो ज़लील ज़िन्दगी (सख्त बुढ़ापे) की तरफ लौटाए जाते हैं (बहुत कुछ) जानने के बाद (ऐसे सड़ीले हो गए कि) कुछ नहीं जान सके बेशक खुदा (सब कुछ) जानता और (हर तरह की) कुदरत रखता है

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا ۚ بَرَادَىٰ رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۚ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ

और खुदा ही ने तुममें से बाज़ को बाज़ पर रिज़क (दौलत में) तरज़ीह दी है फिर जिन लोगों को रोज़ी ज्यादा दी गई है वह लोग अपनी रोज़ी में से उन लोगों को जिन पर उनका दस्तरस (इस्तेयार) है (लौन्डी गुलाम वगैरह) देने वाला नहीं (हालाँकि इस माल में तो सब के सब मालिक गुलाम वगैरह) बराबर हैं तो क्या ये लोग खुदा की नेअमत के मुन्किर हैं

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَحَفَدَةً ۖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ

और खुदा ही ने तुम्हारे लिए बीबियाँ तुम ही में से बनाई और उसी ने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी बीवियों से बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें पाक व पाकीजा रोज़ी खाने को दी तो क्या ये लोग बिल्कुल बातिल (सुल्तान बुत वगैरह) पर ईमान रखते हैं और खुदा की नेअमत (वहदानियत वगैरह से) इन्कार करते हैं

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا ۖ مِّنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا ۚ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ

और खुदा को छोड़कर ऐसी चीज़ की परसतिश करते हैं जो आसमानों और ज़मीन में से उनको रिज़क देने का कुछ भी न एख्तियार रखते हैं और न कुदरत हासिल कर सकते हैं

فَلَا تَضْرِبُوا ۚ لِلَّهِ الْأَمْثَالُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

तो तुम (दुनिया के लोगों पर कयास करके खुद) मिसालें न गढ़ो बेशक खुदा (सब कुछ) जानता है और तुम नहीं जानते

ۚ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا ۖ مَّمْلُوكًا ۖ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ ۚ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا ۖ فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا ۖ وَجَهْرًا ۚ هَلْ يَسْتَوُونَ ۚ ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

एक मसल खुदा ने बयान फरमाई कि एक गुलाम है जो दूसरे के कब्जे में है (और) कुछ भी एख्तियार नहीं रखता और एक शख्स वह है कि हमने उसे अपनी बारगाह से अच्छी (खासी) रोज़ी दे रखी है तो वह उसमें से छिपा के दिखा के (गरज़ हर तरह खुदा की राह में) खर्च करता है क्या ये दोनो बराबर हो सकते हैं (हरगिज़ नहीं) अल्हमदोलिल्लाह (कि वह भी उसके मुकर्रर हैं) मगर उनके बहुतेरे (इतना भी) नहीं जानते

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا ۖ رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ ۖ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ
 أَيْنَمَا يُوَجِّهُهُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ۖ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ ۖ وَهُوَ عَلَى
 صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ

और खुदा एक दूसरी मसल बयान फरमाता है दो आदमी हैं कि एक उनमें से बिल्कुल गूँगा उस पर गुलाम जो कुछ भी (बात वगैरह की) कुदरत नहीं रखता और (इस वजह से) वह अपने मालिक को दूभर हो रहा है कि उसको जिधर भेजता है (खैर से) कभी भलाई नहीं लाता क्या ऐसा गुलाम और वह शख्स जो (लोगों को) अदल व मियाना रवी का हुक्म करता है वह खुद भी ठीक सीधी राह पर कायम है (दोनों बराबर हो सकते हैं (हरगिज़ नहीं)

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ۖ
 إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ

और सारे आसमान व ज़मीन की ग़ैब की बातें खुदा ही के लिए मखसूस हैं और खुदा क़यामत का वाकेए होना तो ऐसा है जैसे पलक का झपकना बल्कि इससे भी जल्दी बेशक खुदा हर चीज़ पर कुदरत कामेला रखता है

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ ۖ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَرَ
 وَالْأَفْئِدَةَ ۖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۖ

और खुदा ही ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से निकाला (जब) तुम बिल्कुल नासमझ थे और तुम को कान दिए और आँखें (अता की) दिल (इनायत किए) ताकि तुम शुक्र करो

أَلَمْ يَرَوْا ۖ إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ ۖ فِي جَوْ السَّمَاءِ مَا يُمَسِّكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ۖ إِنَّ فِي
 ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۖ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۖ

क्या उन लोगों ने परिन्दों की तरफ़ ग़ौर नहीं किया जो आसमान के नीचे हवा में घिरे हुए (उड़ते रहते हैं) उनको तो बस खुदा ही (गिरने से) रोकता है बेशक इसमें भी (कुदरते खुदा की) ईमानदारों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا ۖ تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۚ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَثًا ۖ وَامْتِعًا إِلَىٰ حِينٍ ۚ

और खुदा ही ने तुम्हारे घरों को तुम्हारा ठिकाना करार दिया और उसी ने तुम्हारे वास्ते चौपायों की खालों से तुम्हारे लिए (हलके फुलके) डेरे (खेमे) बना जिन्हें तुम हलका पाकर अपने सफर और हजर (ठहरने) में काम लाते हो और इन चारपायों की ऊन और रुई और बालों से एक वक्त खास (क्रियामत तक) के लिए तुम्हारे बहुत से असबाब और अबकार आमद (काम की) चीज़े बनाई

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلًّا ۖ وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْبَأْسَ ۚ كَذَلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ ۚ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ

और खुदा ही ने तुम्हारे आराम के लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों के साए बनाए और उसी ने तुम्हारे (छिपने बैठने) के वास्ते पहाड़ों में घरौन्दे (गार वगैरह) बनाए और उसी ने तुम्हारे लिए कपड़े बनाए जो तुम्हें (सर्दी) गर्मी से महफूज़ रखें और (लोहे) के कुर्ते जो तुम्हें हाथियों की ज़द (मार) से बचा लंग यूँ खुदा अपनी नेअमत तुम पर पूरी करता है

فَإِنْ تَوَلَّوْا ۖ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ الْمُبِينُ

तुम उसकी फरमाबरदारी करो उस पर भी अगर ये लोग (ईमान से) मुँह फेरे तो तुम्हारा फर्ज सिर्फ (एहकाम का) साफ पहुँचा देना है

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ

(बस) ये लोग खुदा की नेअमतों को पहचानते हैं फिर (जानबुझ कर) उनसे मुकर जाते हैं और इन्हीं में से बहुतेरे नाशुक्रे हैं

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ ۖ شَهِيدًا ۚ ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ

और जिस दिन हम एक उम्मत में से (उसके पैगम्बरों को) गवाह बनाकर क़ब्रों से उठा खड़ा करेंगे फिर तो काफिरों को न (बात करने की) इजाज़त दी जाएगी और न उनका उज्र (जवाब) ही सुना जाएगा

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ الْعَذَابَ فَلَا يُخَفِّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ

और जिन लोगों ने (दुनिया में) शरारतें की थी जब वह अज़ाब को देख लेंगे तो उनके अज़ाब ही में तखफ़ीफ़ की जाएगी और न उनको मोहलत ही दी जाएगी

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا ۖ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا ۖ مِنْ دُونِكَ ۖ فَأَلْقَوْا ۖ إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ ۖ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ

और जिन लोगों ने दुनिया में खुदा का शरीक (दूसरे को) ठहराया था जब अपने (उन) शरीकों को (क़यामत में) देखेंगे तो बोल उठेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार यही तो हमारे शरीक हैं जिन्हें हम (मुसीबत) के वक्त तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे तो वह शरीक उन्हीं की तरफ बात को फेंक मारेगें कि तुम निरे झूठे हो

وَالْقَوَا ۖ إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَامُ ۖ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا ۖ يَفْتَرُونَ

और उस दिन खुदा के सामने सर झुका देंगे और जो इफ़तेरा परदाज़ियाँ दुनिया में किया करते थे उनसे गायब हो जाएँगे

الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَصَدُّوا ۖ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا ۖ فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا ۖ يُفْسِدُونَ

जिन लोगों ने कुफ़्र एख्तेयार किया और लोगों को खुदा की राह से रोका उनके फ़साद वाले कामों के बदले में उनके लिए हम अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते जाएँगे

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ ۖ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ أَنْفُسِهِمْ ۖ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَؤُلَاءِ ۖ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبْيِينًا ۖ لِّكُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُدًى ۖ وَرَحْمَةً ۖ وَبُشْرَىٰ ۖ لِلْمُسْلِمِينَ

और वह दिन याद करो जिस दिन हम हर एक ग़िरोह में से उन्हीं में का एक गवाह उनके मुक़ाबिल ला खड़ा करेंगे और (ऐ रसूल) तुम को उन लोगों पर (उनके) सामने गवाह बनाकर ला खड़ा करेंगे और हमने तुम पर किताब (क़ुरान) नाज़िल की जिसमें हर चीज़ का (शाफ़ी) बयान है और मुसलमानों के लिए (सरमापा) हिदायत और रहमत और खुशख़बरी है

﴿۹۰﴾ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ﴿۹۱﴾ يَعِظُكُم لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

इसमें शक नहीं कि खुदा इन्साफ और (लोगों के साथ) नेकी करने और क़राबतदारों को (कुछ) देने का हुक्म करता है और बदकारी और नाशाएस्ता हरकतों और सरकशी करने को मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत हासिल करो

وَأَوْفُوا ﴿۹۲﴾ بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا ﴿۹۳﴾ الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ﴿۹۴﴾ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ

और जब तुम लोग बाहम क़ौल व क़रार कर लिया करो तो खुदा के एहदो पैमान को पूरा करो और क़समों को उनके पक्का हो जाने के बाद न तोड़ा करो हालाँकि तुम तो खुदा को अपना ज़ामिन बना चुके हो जो कुछ भी तुम करते हो खुदा उसे ज़रूर जानता है

وَلَا تَكُونُوا ﴿۹۵﴾ كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنۢ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنكَاثًا ﴿۹۶﴾ تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا ﴿۹۷﴾ بَيْنَكُمْ أَن تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ﴿۹۸﴾ إِنَّمَا يَبُلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ﴿۹۹﴾ ۝ وَلِيُبَيِّنَ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

और तुम लोग (क़समों के तोड़ने में) उस औरत के ऐसे न हो जो अपना सूत मज़बूत कातने के बाद टुकड़े टुकड़े करके तोड़ डाले कि अपने एहदो को आपस में उस बात की मक्कारी का ज़रिया बनाने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से (ख़ामख़वाह) बढ़ जाए इससे बस खुदा तुमको आज़माता है (कि तुम किसी की पालाइश करते हो) और जिन बातों में तुम दुनिया में झगड़ते थे क़यामत के दिन खुदा खुद तुम से साफ़ साफ़ बयान कर देगा

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً ﴿۱﴾ وَاحِدَةً ﴿۲﴾ وَلَكِن يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ﴿۳﴾ وَلِتُسَلَّنَ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

और अगर खुदा चाहता तो तुम सबको एक ही (किस्म के) गिरोह बना देता मगर वह तो जिसको चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसकी चाहता है हिदायत करता है और जो कुछ तुम लोग दुनिया में किया करते थे उसकी बाज़ पुर्स (पुछ गछ) तुमसे ज़रूर की जाएगी

وَلَا تَتَّخِذُوا ۚ أَيْمَنَكُمْ دَخَلًا ۚ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ ۚ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا ۚ أَلْسُوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ

और तुम अपनी क़समों को आपस में के फसाद का सबब न बनाओ ताकि (लोगों के) क़दम ज़मने के बाद (इस्लाम से) उखड़ जाएँ और फिर आखिरकार क़यामत में तुम्हें लोगों को खुदा की राह से रोकने की पादाश (रोकने के बदले) में अज़ाब का मज़ा चखना पड़े और तुम्हारे वास्ते बड़ा सख्त अज़ाब हो

وَلَا تَشْتَرُوا ۚ بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا ۚ قَلِيلًا ۚ إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ ۚ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

और खुदा के एहदो पैमान के बदले थोड़ी कीमत (दुनियावी नफा) न लो अगर तुम जानते (बूझते) हो तो (समझ लो कि) जो कुछ खुदा के पास है वह उससे कहीं बेहतर है

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۚ وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

(क्योंकि माल दुनिया से) जो कुछ तुम्हारे पास है एक न एक दिन ख़त्म हो जाएगा और (अज़्र) खुदा के पास है वह हमेशा बाक़ी रहेगा और जिन लोगों ने दुनिया में सब्र किया था उनको (क़यामत में) उनके कामों का हम अच्छे से अच्छा अज़्र व सवाब अता करेंगे

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا ۚ أَوْ أَنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۚ فَلَنُحْيِيَنَّهُ ۚ حَيٰوةً ۚ طَيِّبَةً ۚ ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

मर्द हो या औरत जो शरूश नेक काम करेगा और वह ईमानदार भी हो तो हम उसे (दुनिया में भी) पाक व पाकीज़ा जिन्दगी बसर कराएँगे और (आखिरत में भी) जो कुछ वह करते थे उसका अच्छे से अच्छा अज़्र व सवाब अता फरमाएँगे

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

और जब तुम कुरान पढ़ने लगो तो शैतान मरदूद (के वसवसो) से खुदा की पनाह तलब कर लिया करो

إِنَّهُ ۚ لَيْسَ لَهُ ۚ سُلْطٰنٌ عَلَى ٱلَّذِينَ ءٰمَنُوا ۚ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

इसमें शक नहीं कि जो लोग ईमानदार हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं उन पर उसका क़ाबू नहीं चलता

إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ ۚ عَلَى ٱلَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ ۚ وَٱلَّذِينَ هُمْ بِهِ ۚ مُشْرِكُونَ

उसका क़ाबू चलता है तो बस उन्हीं लोगों पर जो उसको दोस्त बनाते हैं और जो लोग उसको खुदा का शरीक बनाते हैं

وَإِذَا بَدَّلْنَا ءَايَةً ۚ مَّكَانَ ءَايَةٍ ۚ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنْزِلُ قَالُوا ۚ إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ ۚ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

और (ऐ रसूल) हम जब एक आयत के बदले दूसरी आयत नाज़िल करते हैं तो हालाँकि खुदा जो चीज़ नाज़िल करता है उस (की मसलहतों) से खूब वाक़िफ़ है मगर ये लोग (तुम को) कहने लगते हैं कि तुम बस बिल्कुल मुज़तरी (ग़लत बयान करने वाले) हो बल्कि खुद उनमें के बहुतेरे (मसालेह को) नहीं जानते

قُلْ نَزَّلَهُ ۚ رُوحُ ٱلْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِٱلْحَقِّ لِيُثَبِّتَ ٱلَّذِينَ ءٰمَنُوا ۚ وَهُدًى ۚ وَبُشْرَىٰ ۚ لِلْمُسْلِمِينَ

(ऐ रसूल) तुम (साफ़) कह दो कि इस (कुरान) को तो रुहलकुदूस (ज़िबरील) ने तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक़ नाज़िल किया है ताकि जो लोग ईमान ला चुके हैं उनको साबित क़दम रखे और मुसलमानों के लिए (अज़सरतापा) खुशख़बरी है

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ ۚ بَشَرٌ ۚ ۚ لِّسَانُ ٱلَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَمِيّ ۚ ۚ وَهَٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيّ ۚ مُّبِينٌ

और (ऐ रसूल) हम तहक़ीक़तन जानते हैं कि ये कुफ़ार तुम्हारी निस्बत कहा करते हैं कि उनको (तुम को) कोई आदमी कुरान सिखा दिया करता है हालाँकि बिल्कुल ग़लत है क्योंकि जिस शख्स की तरफ से ये लोग निस्बत देते हैं उसकी ज़बान तो अजमी है और ये तो साफ़ साफ़ अरबी ज़बान है

إِنَّ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ ٱللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ ٱللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

इसमें तो शक ही नहीं कि जो लोग खुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते खुदा भी उनको मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْكَٰذِبُونَ

झूठ बोहतान तो बस वही लोग बाँधा करते हैं जो खुदा की आयतों पर ईमान नहीं रखते

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْۢ بَعْدِ إِيمَانِهِ ۖ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ ۚ بِالْإِيمَنِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا ۖ فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ

और हकीकत अम्र ये है कि यही लोग झूठे हैं उस शख्स के सिवा जो (कलमाए कुफ्र) पर मजबूर किया जाए और उसका दिल ईमान की तरफ से मुतमइन हो जो शख्स भी ईमान लाने के बाद कुफ्र एख्तियार करे बल्कि खूब सीना कुशादा (जी खोलकर) कुफ्र करे तो उन पर खुदा का ग़ज़ब है और उनके लिए बड़ा (सख्त) अज़ाब है

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ أُسْتَحَبُّوا۟ ۚ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا عَلَىٰ الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ

ये इस वजह से कि उन लोगों ने दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी को आखिरत पर तरजीह दी और इस वजह से की खुदा काफ़िरों को हरगिज़ मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

أُو۟لَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمِعَتْهُمْ وَأَبْصَرَهُمْ ۚ وَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ

ये वही लोग हैं जिनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आँखों पर खुदा ने अलामात मुकर्रर कर दी है

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُونَ

(कि ईमान न लाएँगे) और यही लोग (इस सिरे के) बेखबर हैं कुछ शक़ नहीं कि यही लोग आखिरत में भी यक़ीनन घाटा उठाने वाले हैं

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا۟ مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوا۟ ثُمَّ جَاهَدُوا۟ وَصَبَرُوا۟ ۖ إِنَّ رَبَّكَ بِعَدِّهَا لَغَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

फिर इसमें शक़ नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को जिन्होंने मुसीबत में मुब्तिला होने के बाद घर बार छोड़े फिर (खुदा की राह में) जिहाद किए और तकलीफों पर सब्र किया इसमें शक़ नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार इन सब बातों के बाद अलबत्ता बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

﴿يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ ﴿٩﴾ تُجَدِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ ﴿٩﴾ مَا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ﴾

और (उस दिन को याद) करो जिस दिन हर शख्स अपनी ज़ात के बारे में झगड़ने को आ मौजूद होगा

﴿وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا ﴿٩﴾ قَرْيَةً ﴿٩﴾ كَانَتْ ءَامِنَةً ﴿٩﴾ مُطْمَئِنَّةً ﴿٩﴾ يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا ﴿٩﴾ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ ﴿٩﴾ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا ﴿٩﴾ يَصْنَعُونَ﴾

और हर शख्स को जो कुछ भी उसने किया था उसका पूरा पूरा बदला मिलेगा और उन पर किसी तरह का जुल्म न किया जाएगा खुदा ने एक गाँव की मसल बयान फरमाई जिसके रहने वाले हर तरह के चैन व इत्मेनान में थे हर तरफ से बाफरागत (बहुत ज्यादा) उनकी रोज़ी उनके पास आई थी फिर उन लोगों ने खुदा की नूअमतों की नाशुकी की तो खुदा ने उनकी करतूतों की बदौलत उनको मज़ा चखा दिया

﴿وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ ﴿٩﴾ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ﴾

कि भूक और खौफ को ओढ़ना (बिछौना) बना दिया और उन्हीं लोगों में का एक रसूल भी उनके पास आया तो उन्होंने उसे झुठलाया

﴿فَكُلُوا ﴿٩﴾ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَّالًا ﴿٩﴾ طَيِّبًا ﴿٩﴾ وَأَشْكُرُوا ﴿٩﴾ نِعْمَتَ اللَّهِ إِنَّ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ﴾

फिर अज़ाब (खुदा) ने उन्हें ले डाला और वह ज़ालिम थे ही तो खुदा ने जो कुछ तुम्हें हलाल तय्यब (ताहिर) रोज़ी दी है उसको (शौक से) खाओ और अगर तुम खुदा ही की परसतिश (का दावा करते हो)

﴿إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالْدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ﴿٩﴾ فَمَنْ أَضْطَرَّ غَيْرَ بَاغٍ ﴿٩﴾ وَلَا عَادٍ ﴿٩﴾ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ﴿٩﴾ رَحِيمٌ ﴿٩﴾﴾

उसकी नेअमत का शुक्र अदा किया करो तुम पर उसने मुरदार और खून और सूअर का गोश्त और वह जानवर जिस पर (ज़बाह के वक्त) खुदा के सिवा (किसी) और का नाम लिया जाए हराम किया है फिर जो शख्स (मारे भूक के) मजबूर हो खुदा से सरतापी (नाफरमानी) करने वाला हो और न (हद ज़रूरत से) बढ़ने वाला हो और (हराम खाए) तो बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है

وَلَا تَقُولُوا ۚ لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا حَلَلٌ ۚ وَهَذَا حَرَامٌ ۚ لِّتَفْتَرُوا ۚ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ

और झूट मूट जो कुछ तुम्हारी ज़बान पर आए (बे समझे बूझे) न कह बैठा करो कि ये हलाल है और हराम है ताकि इसकी बदौलत खुदा पर झूठ बोहतान बाँधने लगे इसमें शक नहीं कि जो लोग खुदा पर झूठ बोहतान बाधते हैं वह कभी कामयाब न होंगे

مَتَّعٌ ۚ قَلِيلٌ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

(दुनिया में) फायदा तो ज़रा सा है और (आखिरत में) दर्दनाक अज़ाब है

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا ۚ حَرَمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا ۚ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

और यहूदियों पर हमने वह चीज़ें हराम कर दीं थी जो तुमसे पहले बयान कर चुके हैं और हमने तो (इस की वजह से) उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا ۚ السُّوءَ بِجَهْلَةٍ ۚ ثُمَّ تَابُوا ۚ مِنْ ۚ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۚ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ ۚ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ

मगर वह लोग खुद अपने ऊपर सितम तोड़ रहे हैं फिर इसमें शक नहीं कि जो लोग नादानी से गुनाह कर बैठे उसके बाद सदक़ दिल से तौबा कर ली और अपने को दुरुस्त कर लिया तो (ऐ रसूल) इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार इसके बाद बख्शने वाला मेहरबान है

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً ۚ قَانِتًا ۚ لِلَّهِ حَنِيفًا ۚ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

इसमें शक नहीं कि इब्राहीम (लोगों के) पेशवा खुदा के फरमाबरदार बन्दे और बातिल से कतरा कर चलने वाले थे और मुशरेकीन से हरगिज़ न थे

شَاكِرًا ۚ لَا نَعْمَهُ ۚ أَجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ ۚ مُسْتَقِيمٍ ۚ

उसकी नेअमतों के शुक्र गुज़ार उनको खुदा ने मुनतख़िब कर लिया है और (अपनी) सीधी राह की उन्हें हिदायत की थी

وَأَتَيْنَهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ ۚ وَإِنَّهُ ۖ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ

और हमने उन्हें दुनिया में भी (हर तरह की) बेहतरी अता की थी

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

और वह आखिरत में भी यकीनन नेको कारों से होंगे ऐ रसूल फिर तुम्हारे पास वही भेजी कि इबराहीम के तरीके की पैरवी करो जो बातिल से कतरा के चलते थे और मुशरेकीन से नहीं थे

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا ۖ ۚ فِيهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا ۖ ۚ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

(ऐ रसूल) हफ्ते (के दिन) की ताज़ीम तो बस उन्हीं लोगों पर लाज़िम की गई थी (यहूद व नसारा इसके बारे में) एख्तिलाफ करते थे और कुछ शक़ नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार उनके दरमियान जिस अग्र में वह झगड़ा करते थे क़यामत के दिन फैसला कर देगा

أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ ۚ وَجَدِلُهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۖ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

(ऐ रसूल) तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की राह पर हिकमत और अच्छी अच्छी नसीहत के ज़रिए से बुलाओ और बहस व मुबाशा करो भी तो इस तरीके से जो लोगों के नज़दीक सबसे अच्छा हो इसमें शक़ नहीं कि जो लोग खुदा की राह से भटक गए उनको तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا ۖ ۚ بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ ۖ ۚ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ ۖ ۚ لِلصَّابِرِينَ

और हिदायत याफ़ता लोगों से भी खूब वाक़िफ़ है और अगर (मुख़ालिफ़ीन के साथ) सख्ती करो भी तो वैसी ही सख्ती करो जैसे सख्ती उन लोगों ने तुम पर की थी और अगर तुम सब्र करो तो सब्र करने वालों के वास्ते बेहतर हैं

وَأَصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۖ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ ۖ ۚ مِمَّا يَمْكُرُونَ

और (ऐ रसूल) तुम सब्र ही करो (और खुदा की (मदद) बग़ैर तो तुम सब्र कर भी नहीं सकते और उन मुख़ालिफ़ीन के हाल पर तुम रंज न करो और जो मक्कारीयाँ ये लोग करते हैं उससे तुम तंग दिल न हो

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا ۖ وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ

जो लोग परहेज़गार हैं और जो लोग नेकी कार हैं खुदा उनका साथी है